राजस्व या लोक वित्त

सार्वजनिक आय (Public Revenue)

अर्थ स्रोत एवं वर्गीकरण

सार्वजनिक आय का अर्थ
(Meaning of Public Revenue)

विस्तृत अर्थ में,

सभी प्रकार की राज्य की प्राप्तियां उनकी आय में सम्मिलित की जाती है।

संकुचित अर्थ में,

सार्वजनिक आय में उन साधनों को सम्मिलित किया जाता है जो नियमित प्रवाह के रूप में राज्य को प्राप्त होते रहते हैं।

डाल्टन के अनुसार,

"सार्वजनिक आय को व्यापक तथा संकुचित अर्थों में प्रयोग किया जाता है। व्यापक अर्थ में इससे समस्त प्रकार की आय तथा प्राप्तियों को सम्मिलित किया जाता है, जबकि संकुचित अर्थ में केवल वे प्राप्तियाँ सम्मिलित की जाती है, जो आय में साधारण विचार में सम्मिलित हों" ।

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

अर्थशास्त्र के सभी विषयों एवं कक्षाओं के नोट्स, प्रश्नोत्तर, सैंपल पेपर, वस्तुनिष्ठ प्रश्न, विगत वर्षों के प्रश्नपत्र, अभ्यास प्रश्नपत्र (हिंदी या अंग्रेजी माध्यम) के PDF आपको www.theeconomicsguru.com पर मिल जायेंगे।

इसके साथ ही सभी हिंदी माध्यम तथा अंग्रेजी माध्यम के छात्रों के लिए Free **LIVE CLASS** भी उपलब्ध है, हमारे **YOUTUBE CHANNEL "THE ECONOMICS GURU"** पर । अभी **subscribe** कर लीजिये और ज्यदा से ज्यादा **शेयर** कर दीजिये अपने दोस्तों के बीच।

किसी भी प्रकार की समस्या के लिए आप हमसे सम्पर्क कर सकते है, YOUTUBE के कमेंट बॉक्स में कमेन्ट करें या वेबसाइट के Email वाले Option में जाकर **Email** करे या WhatsApp कर सकते है Website में लिंक दिया गया है।

धन्यवाद
नकुल ढाली
The Economics Guru

लाभार्थी बोर्ड:

CBSE, UK Board, UP Board, Bihar Board, MP Board, CG Board, Rajasthan Board, Haryana Board

साथ ही **BA; B.COM; MA** के सभी SEMESTER लिए भी अध्ययन सामग्री उपलब्ध है।

अभी VISIT करें www.theeconomicsguru.com

THE ECONOMICS GURU

Subscribe my **YOUTUBE** channel **THE ECONOMICS GURU**

Follow me:

Facebook- *Nakul Dhali*
Instagram- *@nakuldhali*

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

सार्वजनिक आय का महत्त्व

अर्थशास्त्र में जो स्थान उत्पादन का है वही स्थान राजस्व में सार्वजनिक आय का है। जिस प्रकार उपभोग के लिये उत्पादन आवश्यक है, ठीक उसी प्रकार व्यय के लिये आय का होना आवश्यक है। *दिन प्रतिदिन बढ़ते हुए व्यय भारो के कारण सार्वजनिक आय का महत्त्व भी बढ़ने लगा है।*

संक्षेप में, **आज बिना आय के सरकारें एक कदम भी आगे नहीं बढ़ सकती।**

सार्वजनिक आय के स्रोत

(Sources of Public Revenue)

सार्वजानिक आय के दो प्रमुख स्रोत हैं-

- कर आगम (Tax Revenue)
- गैर कर आगम (Non – Tax Revenue)

कर आगम (Tax Revenue)

कर आधुनिक युग में लोग आगम का मुख्य स्रोत "कर" हैं।

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

कर एक अनिवार्य भुगतान हैं जो सरकार जनता से प्राप्त करती है।

कर की परिभाषा

फिलिप ई. टेलर के अनुसार, ***"कर सरकार को किया गया वह अनिवार्य भुगतान है जिसके बदले में करदाता किसी लाभ की आशा नहीं रखता"।***

डाल्टन के अनुसार, ***"कर किसी सार्वजनिक अधिकारी द्वारा लगाया गया एक अनिवार्य अंशदान और उसका करदाता को बदले में प्राप्त होने वाली सेवाओं की मात्रा से कोई संबंध नहीं होता है और इसे कानूनी अपराध की सजा के रूप में नहीं लगाया जाता"।***

जैसे

प्रत्यक्ष कर (Direct Tax):

आयकर, निगम कर, संपत्ति कर, उपहार कर आदि।

अप्रत्यक्ष कर (Indirect Tax):

वस्तु एवं सेवाकर (GST), सीमा शुल्क, मनोरंजन कर आदि।

गैर-कर आगम (Non Tax Revenue)

सरकार की वह आय जो कर के अतिरिक्त अन्य स्रोतों से प्राप्त होती है।

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

गैर कर साधनों का महत्त्व दिन प्रतिदिन बढ़ता चला जा रहा है,

जिसके तीन आधारभूत कारण है-

- इन साधनों से राज्य को बड़ी मात्रा में आय प्राप्त होने लगी है।
- गैर कर साधनों से देश के उत्पादन में वृद्धि होती है। लोगों को रोजगार और लाभ मिलता है, जिससे उनकी आय, बचत तथा विनियोग करने की इच्छा पर अनुकूल प्रभाव पड़ता है।
- गैर कर संसाधन अर्थव्यवस्था में संतुलन बनाए रखने के लिए उपयोगी है।

गैर-कर आय के स्रोत

मूल्य (Price)- सरकारी सेवाओं व वस्तुओं के विक्रय द्वारा प्राप्त आय जैसे- डाक टिकट, तार, बिजली आदि।

शुल्क या फीस (Fee)- सरकार की किसी विशेष लाभ या सेवा के बदले में किया गया भुगतान फीस कहते हैं। जैसे: रजिस्ट्रेशन फीस, लाइसेंस फीस आदि।

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

जुर्माना या दंड- जो लोग सरकार के कानूनों का उल्लंघन करते हैं, उन पर जुर्माना लगाकर सरकार धन वसूल करती है।

सरकारी संपत्ति का किराया- सार्वजनिक संपत्तियों जिन पर संपूर्ण राष्ट्र का अधिकार होता है, उनके प्रयोग के बदले में

सरकार किराया वसूल करती है जैसे- जंगल, नदियां, प्रवाह आदि के उपभोग के बदले में किराया।

सरकारी उपक्रमों से आय- आय प्राप्त होती है।

सार्वजनिक आय का वर्गीकरण

(Classification of Public Revenue)

विभिन्न अर्थशास्त्रियों ने सार्वजनिक आय को अपने अपने ढंग से वर्गीकृत किया है, जो कि इस प्रकार है-

बेस्टेबल का वर्गीकरण

बेस्टेबल ने सार्वजनिक आय को दो भागों में बांटा है।

सत्ता के कारण प्राप्त आय तथा बड़े प्रमंडल से आय।

प्रथम श्रेणी में, वह आय आती है जो सरकार को अपनी सत्ता के प्रभाव के कारण प्राप्त होती है जैसे करों से प्राप्त आय।

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

दूसरी श्रेणी की आय सरकार को बड़े प्रमंडलों, निगम या न्यायाधीश होने के नाते प्राप्त होती है। सरकार की इस आय में तथा व्यावसायिक निगम की आय में किसी तरह का अंतर नहीं होता है।

किंतु यहाँ वर्गीकरण संकीर्ण, अवैज्ञानिक तथा अव्यावहारिक है।

ऐडम स्मिथ का वर्गीकरण

एडम स्मिथ ने सार्वजनिक आय को दो श्रेणियों में बांटा है-

सरकारी सम्पत्ति से प्राप्त आय तथा नागरिको से प्राप्त आय।

प्रथम श्रेणी में सरकार को भूमि, वनों तथा खानों से प्राप्त आय सम्मिलित होती है।

द्वितीय श्रेणी में करों और शुल्कों के रूप में प्राप्त आय को सम्मिलित किया जाता है सार्वजनिक कार्य का यह वर्गीकरण पर्याप्त नहीं माना जाता है

सेलिगमैन का वर्गीकरण

सेलिगमैन ने सार्वजनिक आय को तीन वर्गों में बांटा है-

अनिवार्य आय, नि:शुल्क आय तथा अनुबंधीय आय।

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

करो, जुर्माना तथा सार्वजनिक संपत्ति से मिलने वाली आय सरकार की ***अनिवार्य आय*** मानी जाती है।

सरकार को उपहार स्वरूप मिलने वाली आय, जिसके लिए सरकार की ओर से कोई प्रयास नहीं किए जाता, ***नि:शुल्क आय*** कहलाती है। युद्धकाल में नागरिकों द्वारा दिए गए *ऐच्छिक चंदे* को इसी श्रेणी में डालते है।

अनुबंधीय आय में सरकार को भूमि, वनों और खानों को ठेके पर देने से प्राप्त आय सम्मिलित होती है। इस।

लुट्ज का वर्गीकरण

लुट्ज ने सार्वजनिक आय को छः भागों में बांटा है-

1)कराधान 2) सार्वजनिक ऋण

3)प्रशासनिक आय 4) व्यावसायिक आय

5)आर्थिक सहायता एवं अनुदान

6)हस्तांतरण आय

टेलर का वर्गीकरण

टेलर ने सार्वजनिक आय को चार वर्गों में बांटा है-

- कर आय
- प्रशासनिक आय
- व्यावसायिक आय

- अनुदान एवं उपहार

डाल्टन का वर्गीकरण

डाल्टन ने सार्वजनिक आय को बारह भागों में बांटा है-

1)कर 2)ऋण

3)सार्वजनिक सम्पत्ति से प्राप्त आय

4)शुल्क तथा अन्य भुगतान

5)सार्वजनिक उपक्रमों से प्राप्त आय

6)छापेखाने से प्राप्त आय।

7)स्वेच्छा से मिले उपहार।

8)विशेष-निर्धारण।

9)स्वेच्छा से मिला उधार।

10)सरकारी उद्योगों का लाभ।

11)जुर्माने विविध उपहार एवं ‘

12)क्षतिपूर्ति।

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

मेहता का वर्गीकरण

भारतीय विचारक प्रो. जे.के मेहता ने सार्वजनिक आय को चार वर्गों में बांटा है-

- कर संबंधी आय।
- विविध आय जैसे उपहार, जुर्माना विशेष कर आदि।
- शुल्क से प्राप्त आय।
- महसूल से प्राप्त आय।

भारतीय रिज़र्व बैंक का वर्गीकरण

भारतीय रिज़र्व बैंक ने सार्वजनिक आय के दो वर्गों में बांटा है-

- कर संबंधी आय
- गैर-कर संबंधी आय

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

अर्थशास्त्र के सभी विषयों एवं कक्षाओं के नोट्स, प्रश्नोत्तर, सैंपल पेपर, वस्तुनिष्ठ प्रश्न, विगत वर्षों के प्रश्नपत्र, अभ्यास प्रश्नपत्र (हिंदी या अंग्रेजी माध्यम) के PDF आपको www.theeconomicsguru.com पर मिल जायेंगे।

इसके साथ ही सभी हिंदी माध्यम तथा अंग्रेजी माध्यम के छात्रों के लिए Free **LIVE CLASS** भी उपलब्ध है, हमारे **YOUTUBE CHANNEL "THE ECONOMICS GURU"** पर । अभी **subscribe** कर लीजिये और ज्यदा से ज्यादा **शेयर** कर दीजिये अपने दोस्तों के बीच।

किसी भी प्रकार की समस्या के लिए आप हमसे सम्पर्क कर सकते है, YOUTUBE के कमेंट बॉक्स में कमेन्ट करें या वेबसाइट के Email वाले Option में जाकर **Email** करे या WhatsApp कर सकते है Website में लिंक दिया गया है।

धन्यवाद
नकुल ढाली
The Economics Guru

लाभार्थी बोर्ड:

CBSE, UK Board, UP Board, Bihar Board, MP Board, CG Board, Rajasthan Board, Haryana Board

साथ ही **BA; B.COM; MA** के सभी SEMESTER लिए भी अध्ययन सामग्री उपलब्ध है।

अभी VISIT करें www.theeconomicsguru.com

THE ECONOMICS GURU

Subscribe my **YOUTUBE** channel **THE ECONOMICS GURU**

Follow me:

Facebook- *Nakul Dhali*
Instagram- *@nakuldhali*

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE